

मैं तेरी गौरा ओ डमरुधर- तुम्हें होड़ कहाँ जाऊँ
हे पावन परमेश्वर मेरे- जनम-जनम तुम्हें पाऊँ

बेटी हिमांचल की कहलाई, पर मैं तेरी दासी
वन-वन भट्की तेरे कारण, और अँखिया भी प्यारी
तुमसे सब कुछ पाया भगवन, जग से मैं क्या पाऊँ

मैं तेरी-----

मैंने तुमको पाकर स्वामी, सब कुछ ही तो पाया
इस तेह्रवर बन गये प्रभु तुम- सफल हुई मेरी काया
अब काया का मोह नहीं है, तुमसे क्या शरमाऊँ

मैं तेरी-----

तेरे कारण जग में आई, और मुझको वू भूला
तेरा मरम मैं जान न पाई, अपना भेद न खोला
तुम मेरे स्वामी- मैं तेरी दासी- तुमसे क्या मैं दुपाऊँ

मैं तेरी-----

जब-जब जनम लिया मैंने स्वामी, तुमको ही तो पाया
आकर के चरणों में तेरे, भूल गई सब माया
दास "श्री बाबा श्री" शरण में भोला- तुमको शीश नवाऊँ

मैं तेरी-----